ये दिन जिनमें हम रहते हैं

फ्रैंकलीन के नोट्स

पौलुस ने जवान तीमुथियुस को बताया :

2 तीमुथियुस 3:1-5 पर यह स्मरण रख कि **अन्तिम दिनों में कठिन समय आएँगे।** 2 क्योंकि मनुष्य स्वार्थी, लोभी, डींगमार, अभिमानी, निन्दक, माता-पिता की आज्ञा टालनेवाले, कृतघ्न, अपवित्र, दयारहित, क्षमारहित, दोष लगानेवाले, असंयमी, कठोर, भले के बैरी, विश्वासघाती, ढीठ, घमण्डी, और परमेश्वर के नहीं वरन् **सुखविलास ही के चाहनेवाले** होंगे। वे भक्ति का भेष तो धरेंगे, पर **उसकी शक्ति को न मानेंगे (अर्थात पशु सरीखे होंगे);** ऐसों से परे रहना।

(BSI की हिंदी OVR ले लिया गया है, जबकि कोष्ठक का भाग अंग्रेज़ी अनुवाद का अर्थ बताने हेतु लिया गया है)

यीशु ने यह इस प्रकार कहा :

जैसे **नूह के दिन** थे, वैसा ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा।

मत्ती 24:37

“नूह के दिन” किस प्रकार के थे?

उत्पत्ति 6:1-14 फिर जब मनुष्य भूमि के ऊपर बहुत बढ़ने लगे, और उनके बेटियाँ उत्पन्न हुईं, 2 तब **परमेश्वर के पुत्रों** ने (स्वर्गदूत : अय्यूब 1:6, 2:1, 38:7) मनुष्य की पुत्रियों को देखा, कि वे सुन्दर हैं (उनकी लालसा की), और उन्होंने जिस जिसको चाहा उनसे विवाह कर लिया।

4 उन दिनों में पृथ्वी पर **दानव** (नेफ़िलिम, स्त्रियों से उत्पन्न संतान) रहते थे; और इसके पश्चात् (गिनती 13:33) जब परमेश्वर के पुत्र मनुष्य की पुत्रियों के पास गए तब उनके द्वारा जो पुत्र उत्पन्न हुए वे शूरवीर होते थे, जिनकी कीर्ति प्राचीनकाल से प्रचलित है।

5 यहोवा ने देखा कि **मनुष्यों की बुराई** पृथ्वी पर बढ़ गई है, और उनके मन के **विचार** में **जो कुछ** उत्पन्न होता है वह **निरन्तर बुरा ही होता है।** 6 और यहोवा पृथ्वी पर मनुष्य को बनाने से **पछताया,** और वह मन में अति **खेदित** हुआ। 7 तब यहोवा ने कहा, “मैं मनुष्य को जिसकी मैं ने सृष्टि की है पृथ्वी के ऊपर से मिटा दूँगा; क्या मनुष्य, क्या पशु, क्या रेंगनेवाले जन्तु, क्या आकाश के पक्षी, सब को मिटा दूँगा, क्योंकि मैं उनके बनाने से पछताता हूँ।” 8 परन्तु यहोवा के अनुग्रह की दृष्टि नूह पर बनी रही। 9 नूह की वंशावली यह है। नूह **धर्मी** पुरुष

और अपने समय के लोगों में **खरा** था; और नूह **परमेश्वर ही के साथ साथ चलता रहा।** 10 और नूह से शेम, और हाम, और येपेत नामक तीन पुत्र उत्पन्न हुए।

11 उस समय **पृथ्वी परमेश्वर की दृष्टि में बिगड़ गई थी, और उपद्रव से भर गई थी।** 12 और परमेश्वर ने पृथ्वी पर जो दृष्टि की तो क्या देखा कि वह बिगड़ी हुई है; क्योंकि **सब प्राणियों ने पृथ्वी पर अपना अपना चाल-चलन बिगाड लिया था।** 13 तब परमेश्वर ने नूह से कहा, "सब प्राणियों के अन्त करने का प्रश्न मेरे सामने आ गया है; क्योंकि उनके कारण **पृथ्वी उपद्रव से भर गई है**, इसलिये मैं उनको पृथ्वी समेत नष्ट कर डालूँगा।

- जिन स्वर्गदूतों ने स्त्रियों की लालसा की थी, उन्होंने दंड पाया :

  1 पतरस 3:19 उसने जाकर **कैदी आत्माओं को भी प्रचार किया**, 20 जिन्होंने उस बीते समय में आज्ञा न मानी, जब परमेश्वर नूह के दिनों में धीरज धरकर ठहरा रहा, और वह जहाज बन रहा था।

उन **स्वर्गदूतों की संतानें** जो स्त्रियों से उत्पन्न हुई थीं, वे **दानव** थे, जिन्हें नेफ़िलिम भी कहते हैं। जब वे मरे तो उनकी आत्माएं शरीर से मुक्त हो गईं और उन्हें इस पृथ्वी पर आज के समय "**दुष्ट आत्माओं**" के रूप में जाना जाता है। वे सताती, नष्ट करती, हमला करती, विनाश के लिए काम करती हैं और **अपनी विनाशकारी वासनाओं के द्वारा वे आज इस पृथ्वी पर हर प्रकार के अनैतिक यौन व्यवहार को बढ़ावा देती हैं।**

रोमियों 1:26-32 इसलिये परमेश्वर ने उन्हें **नीच कामनाओं** के वश में छोड़ दिया; यहाँ तक कि उनकी **स्त्रियों** ने भी स्वाभाविक व्यवहार को उससे जो स्वभाव के विरुद्ध है, बदल डाला। 27 वैसे ही **पुरुष भी** स्त्रियों के साथ स्वाभाविक व्यवहार छोड़कर **आपस में कामातुर होकर जलने लगे**, [जैसा **नूह के दिनों में** था] और पुरुषों ने पुरुषों के साथ निर्लज काम करके अपने भ्रम का ठीक फल पाया। 28 जब उन्होंने परमेश्वर को पहचानना न चाहा, तो परमेश्वर ने भी उन्हें उनके **निकम्मे मन** पर छोड़ दिया कि वे अनुचित काम करें। 29 इसलिये वे सब प्रकार के **अधर्म, और दुष्टता, और लोभ, और बैरभाव से भर गए; और डाह, और हत्या, और झगड़े, और छल, और ईर्ष्या से भरपूर हो गए, और चुगलखोर, 30 बदनाम करनेवाले, परमेश्वर से घृणा करनेवाले, दूसरों का अनादर करनेवाले, अभिमानी, डींगमार, बुरी-बुरी बातों के बनानेवाले, माता पिता की आज्ञा न माननेवाले, 31 निर्बुद्धि, विश्वासघाती, मयारहित और निर्दय हो गए।** 32 वे तो परमेश्वर की यह विधि जानते हैं कि ऐसे ऐसे काम करनेवाले मृत्यु के दण्ड के योग्य हैं, तौभी न केवल आप ही ऐसे काम करते हैं वरन् करनेवालों से प्रसन्न भी होते हैं।

हमें बताया गया :
इफिसियों 4:27 **और न शैतान को अवसर दो।**

2 कुरिन्थियों 11:14-15 ... क्योंकि **शैतान आप भी ज्योतिर्मय स्वर्गदूत** का रूप धारण करता है। 15 इसलिये यदि उसके सेवक भी धर्म के सेवकों का सा रूप धरें, तो कोई बड़ी बात नहीं,

- पाप इन **"प्राचीन समय की दुष्ट आत्माओं"** को वैध अधिकार देता है कि वे आप पर आक्रमण करें। यदि हम अपने मन को न फिराएं और पाप करते रहें, तो हमने "दुष्ट आत्माओं" को वैध अधिकार दे दिया है, और उस व्यक्ति में वास कर सकती हैं।

देखें : लूका 22:31-34

पौलुस हमें चेतावनी देता है :

1 पतरस 5:8 **सचेत हो, और जागते रहो;** क्योंकि तुम्हारा विरोधी शैतान गर्जनेवाले सिंह के समान **इस खोज में रहता है कि किस को फाड़ खाए।**

मत्ती 24:37 जैसे नूह के दिन थे, वैसा ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा।

उनके पाप की गंभीरता के कारण, ये "दुष्ट आत्माएं" कभी वापस स्वर्ग में नहीं गईं। परमेश्वर ने "जगत के समस्त दिनों के लिए **उन्हें बाँधने** की आज्ञा" दी है।" [हनोक की पुस्तक, अध्याय 14]

प्रभु ने **उन्हें बाँधा** कि वे स्वर्ग न जा सकें। यीशु मसीह के राजदूत होने के नाते (2 कुरिन्थियों 5:20) हमें यह अधिकार मिला है कि इस सत्य को बताएं कि **वे इस पृथ्वी पर बंधी हैं।**

मत्ती 16:19 **मैं तुझे** स्वर्ग के राज्य की **कुंजियाँ दूँगा**: और **जो कुछ तू** पृथ्वी पर **बांधेगा, वह** स्वर्ग **में बंधेगा;** और जो कुछ तू पृथ्वी पर खोलेगा, **वह स्वर्ग में खुलेगा।"**

परन्तु हमारे जीवन के पाप, या लालसाएं, जब "दुष्ट आत्माओं" को अपने जीवन में अधिकार देते हैं, तो वे बाँधने की हमारी घोषणा को रद्द अथवा कमज़ोर कर देते हैं।

- देखें रोमियों 6:16

गलातियों 5:16-26 पर मैं कहता हूँ, **आत्मा के अनुसार चलो** तो तुम **शरीर की लालसा** किसी रीति से पूरी **न करोगे।** 17 क्योंकि शरीर आत्मा के विरोध में, और आत्मा शरीर के विरोध में लालसा करती है, और ये एक दूसरे के विरोधी हैं; इसलिये कि जो तुम करना चाहते हो वह न करने पाओ।

18 और यदि तुम आत्मा के चलाए चलते हो तो व्यवस्था के अधीन न रहे।

- रोमियों 7:5

19 शरीर के काम तो प्रगट हैं, अर्थात् **व्यभिचार, गन्दे काम, लुचपन,** 20 मूर्तिपूजा, टोना, बैर, झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध, विरोध, फूट, विधर्म, 21 डाह, मतवालापन, लीलाक्रीड़ा और इनके जैसे और-और काम हैं, इनके विषय में मैं तुम से पहले से कह देता हूँ जैसा पहले कह भी चुका हूँ, कि **ऐसे ऐसे काम करनेवाले परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे।**

22 पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, शान्ति, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, 23 नम्रता, और संयम हैं; ऐसे ऐसे कामों के विरोध में कोई भी व्यवस्था नहीं। 24 और जो मसीह यीशु **के हैं**, उन्होंने **शरीर को** उसकी लालसाओं और अभिलाषाओं समेत **क्रूस पर चढ़ा दिया है।** 25 यदि हम आत्मा के द्वारा जीवित हैं, तो आत्मा के अनुसार चलें भी।

इफिसियों 6:10-19 इसलिये प्रभु में और उसकी **शक्ति के प्रभाव** में **बलवन्त** बनो। 11 **परमेश्वर के सारे हथियार बाँध लो** कि तुम **शैतान की युक्तियों के सामने खड़े रह सको।** 12 क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध लहू और मांस से नहीं परन्तु **प्रधानों से,** और **अधिकारियों** से, और **इस संसार के अन्धकार के हाकिमों से** और उस **दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है** जो आकाश में हैं। 13 **इसलिये परमेश्वर के सारे हथियार बाँध लो** कि **तुम बुरे दिन में सामना कर सको,** और **सब कुछ पूरा करके** स्थिर रह सको। 14 इसलिये **सत्य** से अपनी कमर कसकर, और **धार्मिकता की झिलम** पहिन कर, 15 **और पाँवों में मेल के सुसमाचार की तैयारी के जूते** पहिन कर; 16 और इन सब के साथ **विश्वास की ढाल लेकर स्थिर रहो** जिससे तुम उस दुष्ट के सब **जलते हुए तीरों** को **बुझा सको।** 17 और **उद्धार का टोप**, और **आत्मा की तलवार**, जो **परमेश्वर का वचन है,** ले लो। 18 **हर समय** और हर प्रकार से **आत्मा में प्रार्थना,** और विनती **करते रहो,** और इसी लिये **जागते रहो** कि सब पवित्र लोगों के लिये लगातार विनती किया करो

2 तीमुथियुस 2:4 जब कोई योद्धा लड़ाई पर जाता है, तो इसलिये कि अपने भरती करनेवाले को **प्रसन्न करे**, **अपने आप को संसार के कामों** में नहीं **फँसाता।**

- मोबाइल फोन की लत। ध्यान भंग करने का मुख्य कारण। ऐसा समय जिसे हमें परमेश्वर के निकट जाने, उससे बात करने और वचन को पढ़ने के लिए इस्तेमाल करना चाहिए।

अजगर को पराजित करने की युद्ध निर्देशिका

फ्रैंकलीन के नोट्स

I. लालसाएं अग्नि श्वासक अजगर हैं

लालसाएं आग उगलने वाले अजगर के समान हैं जिसका जब पोषण किया जाता है तो वह तेज़ी से शक्तिशाली और विशाल दैत्य के रूप में बढ़ जाता है जो आपको खा सकता या भस्म कर सकता है। इस दैत्य को इतना भूखा रखना बहुत कठिन है कि वह ऐसा कमज़ोर हो जाए कि उसे कोठरी में बन्द कर सकें। इस दैत्य को चारा न दें अन्यथा यह आपको खा जाएगा और आपको तबाह कर देगा।

तब **अजगर** स्त्री पर **क्रोधित** हुआ, और उसकी शेष सन्तान से, जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते और यीशु की गवाही देने पर स्थिर हैं, **लड़ने को गया।** प्रकाशितवाक्य 12:17

- वह विशेषकर यीशु मसीह के चेलों से घृणा रखता है और उन्हें पराजित करने के लिए वह कुछ भी कर सकता है।

फिर मैं ने उस **अजगर** के मुँह से, ... तीन **अशुद्ध आत्माओं** को मेंढकों के रूप में निकलते देखा। (14) ये चिह्न दिखानेवाली **दुष्टात्माएँ हैं।** प्रकाशितवाक्य 16:13

- इनमें सबसे नीच और सबसे दुष्ट **"वासना की अशुद्ध आत्मा"** है।
- इस दैत्य का कभी पोषण न करना चाहिए, न ही इसे उत्साहित करना या किसी क्षेत्र की अनुमति देना चाहिए वरना यह आपको अन्दर बाहर से तबाह कर देगा।

यह हमारा युद्ध है – हमें इस

अग्नि श्वासक अजगर को हराना है

निकट भविष्य में यीशु मसीह के द्वारा अन्तिम विजय प्राप्त कर ली जाएगी।

उस ने उस **अजगर**, अर्थात् पुराने साँप को, जो इब्लीस और शैतान है, पकड़ के हजार वर्ष के लिये बाँध दिया, (3) और उसे अथाह-कुंड में डालकर बन्द कर दिया और उस पर मुहर लगा दी कि वह हजार वर्ष के पूरे होने तक जाति जाति के लोगों को फिर न भरमाए। इसके बाद अवश्य है कि वह थोड़ी देर के लिये फिर खोला जाए। प्रकाशितवाक्य 20:2-3

परन्तु जब तक वह दिन न आए : हमें लड़ना है और लालसाओं के अजगर पर विजय पाना है जो हमारी देह रूपी मानव खोह में रहता है।

परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा **हमें जयवन्त करता है।** इसलिये हे मेरे प्रिय भाइयो, **दृढ़ और अटल रहो**, और **प्रभु के काम में सर्वदा बढ़ते जाओ,** क्योंकि यह जानते हो कि तुम्हारा परिश्रम प्रभु में व्यर्थ नहीं है। 1 कुरिन्थियों 15:57-58

विजय आपकी है यदि आप इसके लिए लड़ना चाहते हैं और पाना चाहते हैं।

क्योंकि **परमेश्वर की इच्छा यह है** कि तुम **पवित्र बनो** : अर्थात् **व्यभिचार से बचे रहो**, (4) और तुम में से हर एक पवित्रता और आदर के साथ **अपनी पत्नी को प्राप्त करना जाने,** (5) और यह काम **अभिलाषा से नहीं,** और न उन जातियों के समान जो परमेश्वर को नहीं जानतीं, (6) कि इस बात में कोई अपने भाई (या बहन) को न ठगे, और न उस पर दाँव चलाए, क्योंकि **प्रभु इन सब बातों का पलटा लेनेवाला है**; जैसा कि हम ने पहले ही तुम से कहा और चिताया भी था। (7) क्योंकि परमेश्वर ने हमें अशुद्ध होने के लिये नहीं, परन्तु **पवित्र होने के लिये** बुलाया है। (8) इस कारण जो इसे तुच्छ जानता है, वह मनुष्य को नहीं परन्तु **परमेश्वर को** तुच्छ जानता है, जो अपना पवित्र आत्मा तुम्हें देता है। 1 थिस्सलुनीकियों 4:3-8

बाइबल इस विषय पर स्पष्ट है :

जैसा **पवित्र लोगों के योग्य** है, वैसा तुम में **व्यभिचार** और किसी प्रकार के अशुद्ध काम या लोभ की चर्चा तक न हो। इफिसियों 5:3

क्योंकि **भीतर से**, अर्थात् मनुष्य के मन से, **बुरे बुरे विचार, व्यभिचार,** चोरी, हत्या, **परस्त्रीगमन**, (22) लोभ, **दुष्टता**, छल, **लुचपन**, कुदृष्टि, निन्दा, अभिमान, और मूर्खता निकलती हैं। (23) ये सब बुरी बातें भीतर ही से निकलती हैं और **मनुष्य को अशुद्ध करती हैं।**" मरकुस 7:21-23

II. **आपका मन युद्ध भूमि है** तथा **अपने विचारों पर नियंत्रण** आपकी जीत या पराजय को निर्धारित करेगा।

शैतान ने **यीशु के मन में** मानवीय इच्छाओं के **विचारों को डाल कर** उसकी **परीक्षा ली** (मत्ती 4:1–11)। यदि यीशु इन विचारों में आगे बढ़ते; तो वह पिता की अवज्ञाकारी होते और शैतान की आज्ञा मानकर दुष्ट को **अपने जीवन में पैर रखने का स्थान देते।**
क्योंकि हमारा ऐसा महायाजक नहीं जो **हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दुःखी न हो सके**; वरन् **वह सब बातों में हमारे समान परखा तो गया, तौभी निष्पाप निकला।** (16) इसलिये आओ, हम **अनुग्रह के सिंहासन** के **निकट**

हियाव बाँधकर **चलें** कि हम पर दया हो, और **वह अनुग्रह पाएँ** जो **आवश्यकता के समय हमारी सहायता करे।**
इब्रानियों 4:15-16

इसी प्रकार, **हमारा मन – हमारे विचार** हमारी युद्ध भूमि हैं।

- शैतान हमारे मनों में वासना से भरे विचारों को डालने का हर सम्भव प्रयास करेगा।
- अश्लील साहित्य या तस्वीरें लालसाओं के इस अजगर के लिए ठोस आहार है।

2 कुरिन्थियों 10:2-6 … मैं कुछ लोगों पर जो हम को **शरीर के अनुसार चलनेवाले समझते हैं** (जैसे फिल्मों और टीवी पर देखने को आता है), साहस दिखाने का विचार करता हूँ। (3) क्योंकि यद्यपि हम शरीर में चलते फिरते हैं, तौभी शरीर के अनुसार नहीं लड़ते। (4) क्योंकि **हमारी लड़ाई के हथियार** ... पर गढ़ों को ढा देने के लिये (जहाँ अजगर रहता है) परमेश्वर के द्वारा सामर्थी हैं। (5) इसलिये हम **कल्पनाओं** का और हर एक ऊँची बात का, जो परमेश्वर की पहिचान के विरोध में उठती है, खण्डन करते हैं; और **हर एक भावना को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं।**